डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

17 अगस्त 2016

प्रेस विज्ञप्ति

गुरदयाल सिंह के निधन पर शोक संदेश

कल, 16 अगस्त 2016 को प्रख्यात पंजाबी कथाकार गुरदयाल सिंह का निधन हो गया। उनका जाना भारतीय कथासाहित्य के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

उपेक्षितों के एक मसीहा के रूप में गुरदयाल सिंह ने जीवनपर्यंत अथक रूप से बेआवाज़ को आवाज़ देने, अधिकारहीनों तथा पददलितों के संदर्भ में हमारे विचारों को बदलने, विशेष रूप से एक विषम वैश्विक अर्थव्यवस्था में हमें अधिक न्यायसंगत तथा सामाजिक व्यवस्था की आवश्यकता के प्रति जागरूक करने का काम किया।

गुरदयाल सिंह का जन्म 10 जनवरी 1933 को एक छोटे से गाँव भाइनि फतेह, जैतो मंडी (ज़िला फरीदकोट) के एक अत्यंत गरीब परिवार में हुआ था। छह–सात वर्षों तक उन्होंने एक बढ़ई और लोहार के रूप में भीषण शारीरिक श्रम किया, पहले अपने पिता के साथ तथा बाद में स्वयं।

पंजाबी साहित्य संसार में उनका पदार्पण 1957 में एक प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका *पंज दरिया* में उनकी कहानी *भागवाले* के साथ हुआ। उनके प्रथम उपन्यास *मढ़ी दा दीवा* 1964 ने भारतीय साहित्य में एक नई प्रवृत्ति का आगाज़ किया। उनके रचना संसार में 10 उपन्यास, 12 कहानी–संग्रह, 3 नाटक, 4 कविता–संग्रह, 9 बाल साहित्य की पुस्तकों के अतिरिक्त दो खंडों में आत्मकथा तथा अनुवाद एवं समीक्षाकर्म शामिल हैं। उनके दो उपन्यासों *मढ़ी दा दीवा* और *अन्हे घोड़े दा दान* पर एनएफडीसी के सहयोग से फिल्मों का निर्माण भी किया गया।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार (1975), पंजाब साहित्य अकादमी पुरस्कार (1979), सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार (1986), शिरोमणि साहित पुरस्कार (1992), भारतीय ज्ञानपीठ (2000) तथा चार बार बेस्ट फिक्शन बुक पुरस्कार (1966, 1967, 1968 तथा 1972) से सम्मानित गुरदयाल सिंह को 1998 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा पद्मश्री से अलंकृत किया गया था। साहित्य अकादेमी द्वारा फरवरी 2016 में श्री गुरदयाल सिंह को महत्तर सदस्यता प्रदान करने की घोषणा की गई थी।

साहित्य अकादेमी गुरदयाल सिंह के निधन पर अपनी गहरी शोक संवेदना प्रकट करती है।

(के. श्रीनिवासराव)